Copyright © 2018, Smt Asha Mittal
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN-10: **1-5457-2912-3**
ISBN-13: **978-1-5457-2912-0**

Library of Congress Cataloging in Publication

KASAK
by Asha Mittal
Price: D 250/-

Contents

	Foreword	v
	Dedication	vii
	Acknowledgment	ix
	About Myself	1
	Preface	9

Poems

1.	जाने क्यों? *(Why is it So?)*	13
2.	कोई याद मुझे क्यों आता है? *(Why Do I Remember Some One?)*	15
3.	हे प्रिय! तुम आ ना पाए *(O' Beloved! You Could Not Come)*	17
4.	बुझी आस *(Dying Hope)*	18
5.	दोस्त के जन्म दिन पर *(On Birthday of a Friend)*	22
6.	मेरी वीणा बिलख रही है *(My Veena ...)*	24
7.	अवसान *(Feel of Death)*	26
8.	हाय! सजनियाँ कितनी भोली *(My Sweetheart is so Innocent)*	27
9.	उम्मीद *(Hope)*	30

10. अहसास 32
(Perception)

11. साथी 34
(Companions)

12. ... प्यार न मिटा सके 35
(Could Not Forget the Bond)

13. इन्तज़ार 38
(Waiting for You)

14. भ्रम 40
(Illusion)

15. शुभ कामनाएँ 43
(Wishing Well)

16. बेटी के विवाह पर ... 44
(On Daughter's Wedding)

17. माँ का आश्वासन 47
(Assurance from Mom)

18. तलाश 48
(Search)

19. तुम कुछ मत कहो मेरे दोस्त... 50
(O' My Friend, Don't Say Anything)

20. तन्हाई 52
(Loneliness)

21. दर्द का अहसास 54
(Anguish)

22. बरबादी 57
(Adversity)

23. मुक्तक 59
(Short Verses)

24. विरह–वेदना 63
(Agony of Separation)

25. अवसाद 65
(Gloominess)

26. नया मोड़ 68
(New Phase)

27. अद्‌भुत अनुभूति 70
(Awesome Attraction)

28. उदासीनता 73
(Apathy)

29. "ओ वक्त! ठहर मत" 75
(O' Time! Don't Stop)

30. माँ की कसक 77
(Agony of a Mother)

Treasured Contribution 81

Treasured Memories 95

1
जाने क्यों!
(Why is it So!)

ऊपर छत पर खड़े होकर
गुज़रते यात्रियों को देखना
मेरा स्वभाव बन गया है।
रंग बिरंगी तितलियों की
और उन पर मंडराते भंवरों की
टोली को देखना –
यह भी शायद
मेरा स्वभाव बन गया है।

पर,
तुम्हारा, चुपचाप, अकेले
पैदल चलना, मुझे बहुत भाता है –
तुम्हारी झुकी पलकों पर
मेरी नज़रों का थिरकना
शायद मुझे लुभाता है।

तुम्हें हर दम, यूँ ही
देखते रहना चाहती हूँ
जाने क्यों!
तुम्हारे चेहरे पर एक
मासूमियत सी पाती हूँ–

जाने क्यों!
अजनबी हो कर भी,
तुम मुझ पर छा रहे हो
जाने क्यों! इस मौन
मुलाकात के लोभ में आ कर
प्रतिदिन, इसी समय,
मैं पुनः छत पर आ जाती हूँ
जहाँ से तुम चुपचाप, अकेले,
पैदल गुज़रते चले जाते हो।।

25.01.1968

2

कोई याद मुझे क्यों आता है?

(Why Do I Remember Some One?)

जब दर्पण में सुबह-सुबह
अलसाया रूप निहारूँ तो
नज़रों में कोई मुस्काता है
अपना कुछ नाम बताता है
कोई याद मुझे क्यों आता है?

अलकों से ढके कन्धों पर जब
मस्त हवा के झोंको से-
मेरा आँचल लहरा जाता है
कोई याद मुझे क्यों आता है?

दूर गगन पर छाई घटा
जब-जब बरसे छम-छम करके
खिलती कलियों को देख-देखकर
मुझे प्यार स्वयं पर आता है
कोई याद मुझे क्यों आता है?

फूलों पर जब भँवरे झूमें
झुक-झुक कर उनको वे छू लें -
मेरा यौवन तब शरमाता है
कोई याद मुझे क्यों आता है?

अम्बर पर फैली लाली में
जब सूर्य साँझ को छिपता है
और मन्द गति से ऊपर आ
चन्दा टीका बन खिलता है –

उस मूक मिलन से दोनों के
मेरे शान्त हृदय के सागर में
लहरों का तूफ़ा उठता है – और
कोई याद मुझे आ जाता है।।

25.02.1970

3

"हे प्रिय! तुम आ ना पाए"

(O' Beloved! You Could Not Come)

हे प्रिय! तुम आ ना पाए।
स्वप्न हैं पलकों पे धुंधले
चाँदनी में यादें बिखरीं
चिर व्यथा अंकित नयन में
अश्रु कण पल-पल बहाए -
हे प्रिय, तुम आ ना पाए।

विरह में मिटता रहा मन
शून्य में घुटता रहा दम
वेदना के तिमिर से व्याकुल लबों पर
साधना के दीप भी मैंने जलाए -
पर,
हे प्रिय, तुम आ न पाए।

प्राण हैं विश्रान्त मेरे
श्वास में असह्य कम्पन
खुल रहे सुकुमार बन्धन
आज मिलने को विकल मन -
मोम से घुलते हृदय को
मौत दामन में छिपाए -
हे प्रिय! तुम आ ना पाए। 10.12.1971

4
बुझी आस
(Dying Hope)

बुझे-बुझे से शान्त रूप में
और थके हुए नयनों में
गहन उदासी के पर्दे का
होता है मुझको आभास
और झलकता है पीछे से
एक सती का दैविक चेहरा
जिस पर केवल एक भाव
'सेवा' का होता है अहसास।

आज विधि की निष्ठुरता पर
निश्चल प्रतिमा बन बैठी वह
हर कठिनाई को सहने का
दिल से निश्चय कर बैठी वह
बुझते दीपक जैसे जिसका
जीवन अन्तिम साँस ले रहा
उसी प्रिय के सिर को अपनी
गोदी में रख कर बैठी वह।

बीत गया है अरसा लम्बा
उसको बस ऐसे ही बैठे

कब दिन ढला, रात कब आई
उसको कुछ भी होश नहीं है
जाने किस पल साथी उससे
अनायास ही बिछुड़ ना जाए -
किस्मत को भी कोसे गर तो
इसमें उसका दोष नहीं है।

सात लगाए थे फेरे, अग्नि के,
वो दिन भूल गए हो -
साथ हमारा था जीवन का
क्यों वो वादे भूल गए हो -
ऐसे ही प्रश्नों से उसका
रह-रह दिल भरता जाता है -
ख़ामोश है लेकिन स्वामी उसका
उसकी सदा न सुन पाता है

दृष्टि उठ कर पीछे अपनी
राहों पर गिरती है जब-जब
याद उसी हमसफ़र की अपने
दिल में पीर बढ़ा जाती है -
कैसे इन राहों पे एकाकी
अब मैं चल सकूँगी स्वामी -
आह बनी कुछ ऐसी पीड़ा
लब से उसके सदा आती है।।

बदल गए हैं युग वो जिसमें
मौत भी नारी से डरती थी -
जब नारी अपनी सेवा से
पति के सब दुःख हर सकती थी

अब वह केवल अबला है
हैं आँसू ही उसके साथी –
मैं भी उसका एक रूप हूँ,
दुर्बल सा – यूँ वह कहती।।
विश्रान्त हृदय उसका नहीं पाता
कहीं किसी का भी विश्वास –
उसकी हर इक साँस को जैसे
है बस केवल इतनी आस –
एक बार, बस एक बार ही
स्वामी उसका आँखें खोले –
थके थके से नैनों में
प्यासी उल्फ़त का भर विश्वास।।

पर सुनता है कौन व्यथित की
आकुलता से भरी पुकार
गहन अंधेरा है, और बढ़ता
जाता है दु:ख का आकार –
कड़क रही है बिजली
गर्जन मेघों का अब सहा न जाए –
पानी झर–झर उसके नैनों से
अविरल बहता ही जाए।।

बाहुपाश के घेरे में है
लिया पिया की रुग्ण देह को,
डरती है तूफ़ान कहीं ये
उसका साथी छीन ना जाए –
लेकिन मोह में घिरी अभागिन,
इतना ना महसूस कर सकी

पिया प्यार की गर्मी में भी,
शीतल पल पल होता जाए-
पिया प्यार की गर्मी में भी,
शीतल पल पल होता जाए।।

16.05.1970

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com